Volume-9, No. 1 Feb.-2022, pp. Hin.01-05

कार्यरत एवं अकार्यत महिलाओं के बच्चों की सामाजिक,संवेगात्मक एवं शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन

डा0 होशियार सिंह भाटी (उपाचार्य)
आई0पी0 कॉलिज, द्वितीय परिसर, बुलन्दशहर उत्तर प्रदेश भारत।

सार–
आज का युग मंहगाई का युग माना जा रहा है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है। दूसरी तरफ महिलाओं को बराबरी का दर्जा मिला है। बाहर की दुनियां एवं फेंशन का मुकाबला करने के लिये महिलाओं को नौकरी के लिए बाहर जाना है। उक्त दोनों बिन्दुओं को ध्यान में रखकर शोधार्थी ने कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन इस शोध में किया है। प्राप्त परिणाम में पाया गया कि कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं के बच्चों में सामाजिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परन्तु दोनों महिलाओं के बच्चों का संवेगात्मक उपलब्धि में अन्तर पाया गया है। अर्थात बालकों को संवेगात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

मुख्य शब्द– कार्यरत, अकार्यरत, शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक उपलब्धियाँ

प्रस्तावना–
आज के युग में शिक्षा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गई है। शिक्षामानव के मूल प्रकृति जन्य व्यवहार को परमार्जित करके उसमें धैर्य, सहनशीता त्याग परोपकार एवं अन्य अनेक नैतिक गुणों का विकास करती है शिक्षा ही है जो समाज के सभी वर्गों के लिए उत्पादक, उपयोगी तथा सुसंस्कृत नागरिक बनाकर देश के विकास में अपना महत्पवूर्ण योगदान दे रहे हैं लेकिन समाज महिला वर्ग की शिक्षा के प्रति इतना जागरूक नहीं है, हमारे समाज में महिला वर्ग के विद्यार्थियों को उनके घर परिवार में भी उचित वातावरण नहीं मिल पाता है महिलाओं को सहायता आवश्यक साधन सुविधाएं एवं सही परामर्श और मागदर्शन भी नहीं मिल पता है जिसके कारण महिलाओं की अभिलाशा आकांक्षा स्तर एवं शिक्षा निम्न स्तर की ही रह जाती है। फलस्वरूप महिला वर्ग हर तरफ से अर्थात सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक धार्मिक एवं राजनैतिक दृष्टि से काफी पिछड रही है। महिला वर्ग को मजबूत, ताकतवर व सशक्त बनाने के लिए महिलाओं की शारीरिक, मानसिक सामाजिक नैतिक आर्थिक शैक्षिक समस्याओं को दूर करना होगा एवं इनके विकास के लिए उचित प्रयोग करना होगा। इनके आकांक्षा स्तर को भी उच्च बनाना होगा।

शिक्षा के द्वारा ही जन चेतना एंव समाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है। लेकिन महिलाओं के शिक्षित करने में अनेक सामाजिक समस्याएं है, जिसका मूल कारण देश में व्याप्त लिंग भेद और रूढिवादी सोच हैं साथ ही परिवार में के अभिभावकों का अशिक्षित व निर्धन होना भी मलिाओं की शैक्षिक समस्याओं को प्रोत्साहान करता है। शिक्षा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती हैं इस सर्वांगीण विकास में विद्यालय और गृह पर्यावरण का कितना योगदान है, इस पर विचार करने की दृष्टि से शिक्षा के प्रमुख उददेश्यों पर अपन ध्यान केन्द्रित करें तो यह तथ्य स्पष्ट होता है कि अगर पर्यवरण ही संतुलित नहीं होगा तो मनुष्य का सर्वांगीण विकास तो सम्भव है ही नहीं। गृह पर्यावरण असंतलित होने से शिक्षा का प्रमुख उददेश्य ही चरमरा जायेगा, क्योंकि अगर गृह वातावरण में उनकी शारीरिक एवं मानसिक क्रियायें सही ढंग से पूरी नहीं होगी तो वह तनावग्रस्त एवं दबाव में रहने लगेंगी। स्त्री शिक्षा अनिवार्य हैं वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है कि स्त्री को भी उतनी शिक्षित होना चाहिए जितना कि पुरूष को यह सिद्ध सत्य है, कि यदि माता शिक्षित न होगी तो देश का कदापि कल्याण नहीं हो सकता।

भारतीय विचारकों के अनुसार– **डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर–** ने स्त्री और उनके समान अधिकारों के लिए संविधान में नियम पारित किया और महिला सशक्तिकरण के लिए कई कदम उठाए। महिलाओं को अधिकार देने तथा उन्हें सशक्त बनाने के लिए सन् 1951 में उन्होंने हिन्दू कोड बिल' संसद में पेश किया।

डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर को कैस दृढ़ विश्वास था कि महिलाओं की उन्नति तभी संभव होगी जब उन्हें परिवार और समाज में बराबरी का अधिकार दर्जा

मिलेगा। शिक्षा और आर्थिक उन्नति उन्हें सामाजिक बराबरी का दर्जा दिलाने में मदद करेगी।

किसी भी समुदाय समाज देश और राष्ट्र के विकास के लिए यह आवश्यक है कि वहां पर शिक्षा का व्यापक रूप से प्रचार एवं प्रसार हो। प्रत्येक नागरिक चाहे वह बालक हो या बालिका, स्त्री हो या पुरूष, शहरी हो या ग्रामिण सभी को शिक्षा के समान, बराबर और सुलभ अवसर उपलब्ध हो जिस से वह सम्यक रूप से विकसित होकर राष्ट्रीय विकास में सहयोगी बन सके।

आधुनिक समाज में एक स्त्री की भूमिका परिवार तथा बच्चों की परवरिश, पालन पोषण से कहीं अधिक हैं वह स्वयं के लिए आजीविका का साधन चुन रही है और समाज के विकास के लिए पुरूष के साथ सामाजिक, आर्थिक, व्यावहारिक रूप से भी दायित्वों का निर्वहन कर रही है। वर्तमान समय में स्त्रियां अपने अस्तित्व को पहचान रही है एवं आत्मनिर्भर बन रही है। स्त्रियाँ अपने परिवार के प्रति अपने दायित्वों को समझ रही है और यह दायित्व उन्हें घर से बाहर निकलने के लिए विवश कर रहे है। अपने दायित्वों के निर्वहन के लिए उन्हें दिन के अधिकांश समय अब घर से बाहर रहना पड़ता है आत्मनिर्भर बनने के लिए उनके ये कदम सराहनीय है। चाहे उसके लिए समय और अत्यधिक मेहनत व्यय ही क्यों न करना पड़े। परन्तु कार्यकारी महिलाऐं समाज की मुख्य धारा में शामिल है।

बाहर कार्य करने का मुख्य कारण मुख्य रूप से परिवार की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में पुरूष का सहयोग करना है एक कामकाजी महिला को दोहरी भूमिका निभानी होती है। एक मां और पत्नी तथा एक कर्मण्ठ आत्मनिर्भर कर्मचारी के रूप में जिससे उनकी जिम्मेदारी भी दो गुनी हो जाती है। और जिसे महिलायें उत्तम रूप से निभाती भी है।

अतः महिलायें ऐसी नौकरी को तबज्जों देना चहाती है जिसे वे अपने परिवार की आर्थिक रूप में सहायता कर सकें और स्वयं आत्मनिर्भर होने के साथ–साथ अब महिलायें अपने सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्वों की ओर भी सकारत्मक रूप से देखती है और परिवार को भी समय दे सकती है। इसलिए महिलाओं का मुख्य रूझान शिक्षण की तरफ अधिक होता है इससे उनको अपने बच्चों और परिवार के साथ अधिक समय व्यतीत करने का भरपूर अवसर मिलता है। जिससे व अपने बच्चों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, व्यावहारिक, शैक्षिक नैतिक, समाजिक, विकास पर अधिक ध्यान दे सकती है। अन्य व्यवसायों में कार्य करती महिलायें ऐसा नहीं कर पाती है। उन्हें अपेक्षाकृत कम समय अपने परिवार और बच्चों के लिए मिलता है।

जिसके कारण ऐसी महिलायें अपने बच्चों के विकास और उनकी उपलब्धियों पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दें पाती है। इस सब से अलग अकार्यरत महिलायें अपने परिवार और बच्चों पर अधिक ध्यान दें पाती है। वे अपने बच्चों के पालन पोषण और उनकी देखभाल में भरपूर एवं अपना पूरा समय व्यतीत करती है। परन्तु उनके स्वयं के निम्न शैक्षिक स्तर होने के कारण अधिकांश उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों और उनके विकास पर प्रभाव पडता है। इसलिए महिलाओं का मुख्य रूझान शिक्षण की तरफ अधिक होता हैं जबकि अन्य व्यवसायों में कार्य करने वाली महिलायें अपने परिवार तथा बच्चों को उतना समय नही दे पाती है जितनी शिक्षिका दे पाती हैं।

अध्ययन का महत्व एवं आवश्यकता–

शिक्षा की उपलब्धि सम्बन्धी कोई भी योजना तभी सफल हो सकती है जब छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि वास्तविक तथ्यों पर आधारित हो। बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रखर बनाने के लिए विद्यालय प्रशासन के साथ साथ उनके परिवार का महत्वपूर्ण योगदान होता हैं परिवार में भी मुख्यतः माता ही इस दायित्व को निभाती है। परन्तु यदि माता कामकाजी हो चाहे शिक्षिका अथवा अन्य व्यवसायों में कार्यरत हो तो इससे घर का वातावरण प्रभावित होता है। जब महिला कार्य के लिए बाहर जाती है तो बच्चों को ना चाहते हुए भी छोटी–छोटी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ पूर्ण करनी होती है। जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है जैसे–

- बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, और बौद्धिक विकास प्रभावित होता है।
- विषय और व्यवसाय चुनने में कठिनाई।
- बालक, भौतिक, सामाजिक तथा आधात्मिक वातावरण के प्रति अनुकूलन नहीं हो पाता ।
- मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है।
- विद्यालय समाज और उत्पन्न परिस्थितियों के साथ समायोजन की समस्या।
- संवेगात्मक और नैतिक विकास प्रभावित होता है।

अध्ययन के उददेश्य

बालक के सभी व्यवहार अपने परिवार विशेषकर अपनी माता एवं उसके द्वारा दिये गये निर्देषों से प्रभावित होते हैं अत इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के उददेश्य से कि बच्चों का शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी माता का कार्यरत होना अथवा कार्यशील होना या अकार्यरत होने का प्रभाव पडता है अथवा नहीं इसका अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के निम्न उददेश्य हैं–

1 कार्यरत और अकार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

2. कार्यरत और अकार्यरत महिलाओं के बच्चों की सामाजिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

3. कार्यरत और अकार्यरत महिलाओं के बच्चों की संवेगात्मक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

शोध की परिकल्पायें–

अध्ययन के उददेश्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पनायें बनायी गयी है–

1. कार्यरत महिलाओं और अकार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलिब्ध में सार्थक अन्तर नहीं है।

2. कार्यरत महिलाओं और अकार्यरत महिलाओं के बच्चों की सामाजिक उपलिब्ध स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. कार्यरत महिलाओं और अकार्यरत महिलाओं के बच्चों की संवेगात्मक उपलिब्धयों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुसंधान विधि–

प्रस्तुत शोध कार्य में कार्यकर्ता ने सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या–

बुलन्दशहर के सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के कक्षा दस के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

प्रतिदर्श व प्रतिपद–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने प्रतिदर्श गुणों को ध्यान में रखते हुए यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया है जो सम्भव प्रतिदर्श का एक प्रकार है शोध में बुलन्दशहर के सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के चार विद्यालयों के 25–25 छात्रों को मिलाकर 100 छात्रों का चयन किया गया।

संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण –

शैक्षिक उपलिब्ध हेतु कक्षा 10 के छात्रों के प्राप्तांकों का प्रयोग किया गया है। उच्च स्तरीय शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के अभाव में छात्रों के कुल प्राप्तांकों का आंकडों के रूप में प्रयुक्त किया गया है। प्रदत्तों का संग्रह–शैक्षिक उपल्धि से सम्बन्धित आकडों का संग्रहण करने हेतु स्कूलों से उपस्थित अभिलेखों एवं छात्रों द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर किया गया ।

प्रदत्तों का साख्किीय विश्लेषण–

सांख्यिकीय वह विज्ञान है जो प्रदत्तों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या करती है इस अध्याय के अन्तर्गत प्रदत्तों का सारणीयन, वर्गीकरण, विश्लेषण एवं अर्थापन किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण–

शोध कार्य में आंकडों का संकलन एंव उनका सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता हैं जो अनुसंधान पूर्व निर्मित परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु नितांत आवश्यक है। आंकडों के सांख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात् अध्ययन कर्ता ने निर्मित परिकल्पना का परिक्षण किया तथा परिणामों के आधार पर परिकल्पना की सार्थकता तथा असार्थकता को जांचा गया ।

अध्ययन के परिणाम–

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण तथा विवेचन के पश्चात् सम्पूर्ण अध्ययन का सम्बन्ध स्थापित करना प्रत्येक शोधकार्य के लिए आवश्यक चरण है। इसके अभाव में समस्या का विहंगम दृष्टि से न तो आभास हो सकता है और न तो उसे सुलझाने के लिए भली भांति मार्ग प्रशस्त हो सकता है। इस अध्ययन में शोधकर्ता को सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचन के पश्चात् निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए है।

1. कार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांको का मध्यमान अकार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों से अधिक है अतः स्पष्ट है कि कार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि अकार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि की अपेक्षा अधिक है।

2. कार्यरत महिलाओं और अकार्यरत महिलाओं के बालकों के सामाजिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

3. कार्यरत महिलाओं और अकार्यरत महिलाओं के बालकों के संवेगात्मक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया है। माताओं का कार्यरत या अकार्यरत होना बालकों को संवेगात्मक रूप से प्रभावित करता है।

परिकल्पना 1

कार्यरत महिलाओं और अकार्यरत महिलाओं के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण बालकों की शैक्षिक उपलब्धियों का पता लगाने के लिए किया गया था। इसका मुख्य बिन्दु माताओं का कार्यरत या अकर्यारत होना था आर्थात् उनका किसी भी व्यवसाय और संस्था से जुड़े होने से था चाहे फिर वो सरकारी हो या गैर सरकारी।

अतः शिक्षा और अध्ययन के प्रति बालकों में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया। अतः इन आयामों में शून्य परिकल्पना निरस्त की गयी। और 0.01 स्तर सार्थक अन्तर पाया गया और इस आयाम में परिकल्पना अस्वीकृत की गयी। लेकिन सम्पूर्ण योग में 10.05 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की गयी।

अतः कार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि अकार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों से स्पष्ट है कि कार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि की अपेक्षा अधिक है।

परिकल्पना 2:

कार्यरत महिलाओं और अकार्यरत महिलाओं के बालकों की सामाजिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

इस परिकल्पना का परिक्षण करने पर बालकों की सामाजिक उपलब्धि स्तर में 0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः आयाम में शून्य परिकल्पना स्वीकृत की गयी।

अतः कार्यरत महिलाओं और अकार्यरत महिलाओं के बालकों के सामाजिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

परिकल्पना 3

कार्यरत महिलाओं और अकार्यरत महिलाओं के बच्चों कीसंवेगात्मक उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

इस परिकल्पना का परिक्षण करने पर कार्यरत महिलाओं और अकार्यरत महिलाओं के बालकों के संवेगात्मक 0.01 स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया है। माताओं का कार्यरत या अकार्यरत होना बालकों को संवेगात्मक रुप से प्रभावित करता है। किसी भी देश को पूर्ण रूप से विकसित होने के लिए वहां की महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है शिक्षित महिला उस औजार की तरह है जो अपने पैनेपन से भारतीय समाज पर और अपने परिवार पर अपने हुनर तथा ज्ञान से समग्र रुप में सकारात्मक प्रभाव डालती है।

निष्कर्ष–

प्राप्त परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आज के समय की तकनीकी आवश्यकताओं तथा तीव्र औद्योगिकरण ने भारतीय परिवेश को परिवर्तित कर दिया है। नागरिकों के रहन–सहन एवं सोच–समझ में अत्यधिक बदलाव आया है। जिसने स्त्रियों की स्वतन्त्रता को एक मजबूत पक्ष प्रदान किया है।

अतः हाल के वर्षों में घर से बाहर कार्य करने वाली महिलाओं की संख्या में। वृद्धि हुई है चाहे वह शिक्षिका हो या अधिकारी या सामान्य सी कर्मचारी सभी परिवार तथा नौकरी की दोहरी जिम्मेदारी निभा रही है परन्तु इन सभी के बीच महत मुददा बच्चों की जिम्मेदारी के दायित्व का है। प्रस्तुत शोध शिक्षण व्यवसाय एवं अन्य व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी माताओं के कार्यों के प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

आज के आधुनिक एवं प्रतियोगी समाज में बौद्धिक उपलब्धि किसी भी बच्चे के भविष्य एवं उसके भावी जीवन को सवारने का सबसे मुख्य एवं महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने में माता का कार्य करना एक अन्य कारक है इसके अतिरिक्त बुद्धि समायोजन एवं पारिवारिक पृष्ठ भूमि अन्य ऐसे कारक है जो बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता को निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं।

1. कार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांको का मध्यमान अकार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि कार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि अकार्यरत महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि की अपेक्षा अधिक है।
2. कार्यरत महिलाओं और अकार्यरत महिलाओं के बालकों के सामाजिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
3. कार्यरत महिलाओं और अकार्यरत महिलाओं के बालकों के संवेगात्मक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया है। माताओं का कार्यरत या अकार्यरत (गैर कार्यरत) होना बालकों को संवेगात्मक रूप से प्रभावित करता

भावी शोध हेतु सुझाव–

एक अच्छा शोध कार्य वह माना जाता है, जो अनेक नवीन शोधकार्यों के लिए। दिशा प्रदान करता हो। प्रस्तुत शोध निम्नलिखित दृष्टि से भावी शोध कार्य हेतु महत्वपूर्ण योगदान कर सुझाव प्रस्तुत कर सकता है

1. यह शोध छोटे प्रतिदर्श पर किया गया है परन्तु भविष्य में इसे वृहद प्रतिदर्श पर प्रशासित कर अधिक विश्वसनीय परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।
2. प्रस्तुत शोध बुलन्दशहर के कुछ ही विद्यालयों से प्राप्त प्रतिदर्श के आधार पर ही किया गया है। अतः शहर के छात्रों के अतिरिक्त ग्रामीण परिवेश में रहने वाले छात्रों को भी भावी शोध में सम्मिलित किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध का प्रतिदर्श सी0 बी0 एस0 ई0 (C.B.S.E.) विद्यालयों से लिया गया है अतः सुझाव हेतु भावी शोध के लिए अन्य बोर्ड अथवा सरकारी स्कूलों के छात्रों को भी शामिल किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. भाविना एवं (1999) बेरोजगार माताओं के बच्चों व निमोदित माताओं के बच्चों की समय का तुलनात्मक अध्ययन।
2. आनन्द सरोज (2003) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों, सामाजिक दबाव और शैक्षिक नियति का अध्ययन।
3. एस.के सिंह (2004) मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षाशास्त्र शोध विधियां, पटना, मोतीलाल बनारसीदास।
4. सरिता मेनारिया (2004) विद्यार्थियों में व्याप्त दबाव व शैक्षिक उपलिब्ध के मध्य संम्बन्ध का अध्ययन।
5. भारद्वाज ऋतु (2012) अध्यापन विभिन्न व्यवसायों में कामरत महिलाओं के नेतृत्व गुण, सामाजिक गतिशीलता, समायोजन और पारिवारिक दायित्व का अध्यान।
6. शर्मा अर से 2015 शिक्षा अुनसंधान में मूलतत्व एवं शोध प्रक्रिया मेरठ, आर लाल, बुक डिपो।
7. गुप्ता एस पी. (2015) आधुनिक मापन एव मूल्याकंन इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
8. अस्थाना (2010) शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यकी अग्रवाल प्रशासन, आगरा।